बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति एवं उनमें कम्प्यूटर भय का अध्ययन

(जयपुर जिले के सन्दर्भ में)

डॉक्टर ऑफ फिलोस्फी (शिक्षा)

उपाधि प्राप्ति हेतु प्रस्तुत संक्षिप्त

शोध–प्रारूप

पर्यवेक्षक :
डॉ. सरोजनी मिश्रा

शोधकर्त्ता:
मंजू कुमारी शर्मा

शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा विभाग

श्याम विश्वविद्यालय

लालसोट, दौसा, राजस्थान

2019

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	परिचय	1–2
2.	साहित्य का पुनरावलोकन	3–7
3.	शोध के उद्देश्य	8–9
4.	शोध अध्ययन का क्षेत्र	9–11
5.	शोध प्ररचना	12
6.	निदर्शन पद्धति एवं न्यायदर्श चयन	12–13
7.	अध्यायीकरण	14
8.	सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची	15–17

परिचयः

सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सहयोगी शिक्षण एक शैक्षणिक अभिवृत्ति है जिसमें सूचना प्रौद्योगिकी या इंटरनेट के माध्यम से सामाजिक संपर्क के माध्यम से सीखना होता है। इस प्रकार की शिक्षा को प्रतिभागियों के बीच संचार के प्राथमिक साधन या एक सामान्य संसाधन के रूप में प्रौद्योगिकी का उपयोग करके ज्ञान के बंटवारे और निर्माण की विशेषता है। सीएससीएल को ऑनलाइन और कक्षा सीखने के वातावरण में लागू किया जा सकता है और यह समकालिक या अतुल्यकालिक रूप से हो सकता है।

इंटरएक्टिव कंप्यूटिंग तकनीक की कल्पना मुख्य रूप से शिक्षाविदों द्वारा की गई थी, लेकिन शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग को ऐतिहासिक रूप से समकालीन अनुसंधान प्रवृत्तियों द्वारा परिभाषित किया गया है। निर्देश में सॉफ्टवेयर के शुरुआती उदाहरणों ने छात्रों को व्यवहारवादी पद्धति का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जो बीसवीं शताब्दी के मध्य में लोकप्रिय था। 1970 के दशक में जैसे ही संज्ञानात्मकवाद ने शिक्षकों के साथ कर्षण प्राप्त किया, डिजाइनरों ने सीखने की तकनीक की कल्पना करना शुरू कर दिया जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल को नियोजित करती है, जो व्यक्तिगत शिक्षार्थियों के अनुकूल हो सकती है। सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सहयोगात्मक शिक्षा एक ऐसी रणनीति के रूप में उभरी जो रचनावाद और सामाजिक संज्ञानवाद के बढ़ते दर्शन के लिए अनुसंधान निहितार्थों से समृद्ध है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में सूचना प्रौद्योगिकी के कक्षा शिक्षण में प्रयोग पर प्रकाश डाला। गया है। अमेरिका एवं रूस जैसे विकसित देशों में सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षण का अनिवार्य अंग बन गया है। आठवें दशक में अमेरिकी शिक्षाविदों ने कंप्यूटरों की क्रांतिकारी भूमिका को स्वीकार करते हुए सोचा था कि आने वाले बीस वर्ष में सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षण के सभी स्तरों पर अपना प्रभाव स्थापितकर लेंगे। आज वहाँ के ज्यादातर विद्यालयों में मल्टीपल माइक्रो सूचना प्रौद्योगिकी हैं, सूचना प्रौद्योगिकी लैब हैं तथा इनका पूरा जाल बिछा हुआ है। अमेरिकी शोधार्थियों ने शोध सर्वेक्षणों से निष्कर्ष निकाले हैं कि विद्यालयों में सूचना प्रौद्योगिकी लगाने से शिक्षण में कोई तात्विक अथवा आमूल चूल परिवर्तन नहीं आ पाया। कई जगह ये व्यर्थ पड़े हैं, शिक्षक उन पर कार्य भी नहीं करना चाहता है।

सम्पूर्ण विश्व सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग अपने आर्थिक एवं सामाजिक समृद्धि के एक प्रभावी साधन के रूप में कर रहा हैं। हमारा देश एक बहु सांस्कृतिक एवं बहुभाषी देश है और हमारी लगभग 67 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में रहती हैं, जिनकी भाषा प्रान्तीय आधार पर अलग–अलग है। अतः जब तक हम पूरे देश की जनसंख्या को एक साथ लेकर सूचना प्रौद्योगिकी की दिशा में अग्रसर नहीं हो पाएँगे, तब तक देश का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं है। हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में तकनीकी विषयों पर स्तरीय पुस्तकों के अभाव के कारण अंग्रेजी का कम ज्ञान रखने वाले मेधावी छात्र इस क्षेत्र में पीछे रह जाते हैं और इसलिए सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जनशक्ति का अपेक्षित विकास नहीं हो पा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी का मुख्य उद्देश्य उद्योग की अपेक्षाओं के अनुरूप सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बढिया़ क्वालिटी की जनशक्ति तैयार करना है और इसे हासिल करने के लिए देश के कोने–कोने में स्थित निजी क्षेत्र के संस्थानों को स्थान, शिक्षक वर्ग, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, पुस्तकालय तथा अन्य सुविधाओं से संबंधित पूर्व निर्धारित मानदण्डों को पूरा करने पर इस योजना के अन्तर्गत मान्यता प्रदान की जाती है, जो निर्धारित पाठ्य विषयों के अनुसार विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देते हैं। भारत में सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति ने अर्थव्यवस्था का सम्पूर्ण मंजर ही बदल दिया है। आई.टी. क्रांति के परिणामस्वरूप युवा प्रतिभाएं ज्यादा निखर कर मार्केट में आ रही हैं। हजारों हाथों को उनके हुनर (दक्षता) के अनुसार 'जॉब ऑपरच्यूनिटी' मिल रही हैं। देश में 'कम्प्यूटर एज्युकेशन' की बाढ़–सी आ गई है। 'सूचना तकनीक' के क्षेत्र में हुई उन्नति ने रोजगार के नए अवसर पैदा किए हैं।

साहित्य का पुनरावलोकनः

पुस्तकें–

- **जैन, डॉ. गरिमा** – स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा शिक्षण, युनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर–2007
- **जॉन डब्ल्यू वेस्ट – "**रिसर्च एन एजूकेशन'' प्रिटिंग हॉल इन्क इन्गल्वुड क्लिफ्स एन.जे. 1959
- **कपिल एच. के – "**अनुसंधान की विधियाँ'' एच. पी. भार्गव बुक हाऊस आगरा, संस्करण 2001
- **पालीवाल, डॉ. शिखा, पालीवाल, डॉ. यामिनी एवं जाटव, डॉ. पी.एल.** – ''शारीरिक शिक्षा एवं योग'', राजस्थान प्रकाशन
- **सिडाना, डॉ. अशोक कुमार** – ''स्वास्थ्य व शारीरिक शिक्षा शिक्षण'' शिक्षा प्रकाशन–2009
- **सिंह, डॉ. होशियार एवं डॉ. सुशील कुमार** – ''स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य शिक्षा'' निपुण प्रकाशन, 2019
- **शैरी, डॉ. जी.पी. एवं शुक्ला, डॉ. सी.एस.** – ''स्वास्थ्य शिक्षा'' विनोद पुस्तक मंदिर, 2009
- **शर्मा, आर. ए. –** ''शिक्षा अनुसंधान'' आर. लाल बुक डिपो मेरठ, संस्करण–2007
- **वेस्ट, डब्ल्यू जॉन –** ''रिसर्च एन एजूकेशन'' हॉल प्रा. लि. नई दिल्ली सं. 1973,
- **वेस्ट जॉन डब्ल्यू – "**रिसर्च एन एजूकेशन'' प्रिन्टिग हॉल ऑफ इण्डिया प्रा. लि., नई दिल्ली, 2006
- **शर्मा, आर. ए. –** ''शिक्षा तकनीकि'' कमल बुक डिपो मेरठ, संस्करण–2006
- **वर्मा, रामपाल सिंह –** ''व्यवहारिक मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, संस्करण–2004
- **वर्मा, रामपाल सिंह –** ''शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, संस्करण–2001

- **गुप्ता, एस. पी. –** ''शिक्षा तथा मनोविज्ञान में आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक डिपो, इलाहबाद, संस्करण–1996

शोध ग्रंथ–

ऑस्ट, एलन और बिशेलमेयर शिक्षक हमारे शिक्षण संस्थानों की नींव हैं। वे कक्षा में निर्देश और गतिविधियों को आकार देते हैं और वे हमारे छात्रों के लिए आदर्श हैं। उनके समर्थन के बिना निर्देशात्मक तकनीक अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुंच पाएगी। अर्थात् सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग अंततः शिक्षक के ज्ञान और कौशल पर निर्भर करता है, वह व्यक्ति जिसका कक्षा के वातावरण पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। इसलिए, सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में शिक्षकों की अभिवृत्ति और सूचना प्रौद्योगिकी प्रौद्योगिकी के प्रति उनका अभिवृत्ति और कक्षा शिक्षण में इसे एकीकृत करने की प्रभावशीलता का बहुत महत्व है।

1980 के दशक से सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति उनके अभिवृत्ति की जांच करने के लिए कई अध्ययन किए गए हैं। सामान्य तौर पर, अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला है कि अधिकांश शिक्षक कक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी प्रौद्योगिकी को लागू करने के बारे में उत्साहित हैं और कक्षा के उपकरण के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति और सूचना प्रौद्योगिकी के कक्षा उपयोग के रसद के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। स्कूलों में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अटूट उत्साह जारी है। बड़ी संख्या में शिक्षकों ने सूचना प्रौद्योगिकी को बढ़ावा दिया, और सूचना प्रौद्योगिकी के शौकीनों के नेटवर्क पूरे देश में फैल गए। कुछ शिक्षक सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग को निर्देश के लिए एक मूल्यवान उपकरण के रूप में देखते हैं।

डुपने और क्रेंडल, सूचना प्रौद्योगिकी प्रौद्योगिकी के प्रति कक्षा शिक्षकों के रवैये के राष्ट्रीय सर्वेक्षण के निष्कर्षों के अनुसार, यादृच्छिक रूप से चुने गए 1,100 शिक्षकों में से, नब्बे प्रतिशत ने महसूस किया कि सूचना प्रौद्योगिकी छात्रों की मदद करने के लिए एक प्रभावी उपकरण हो सकता है। बुनियादी पढ़ने और लिखने के कौशल का विकास करना। सत्तासी प्रतिशत ने निर्देश के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग का समर्थन किया। कुछ अध्ययनों के निष्कर्षों से पता चलता है कि सामाजिक अध्ययन शिक्षकों का सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति

है। सूचना प्रौद्योगिकी तक उनकी व्यापक पहुंच है। बड़ी संख्या में शिक्षक अपने कार्य में कम्प्यूटर का प्रयोग करते हैं। सामाजिक अध्ययन शिक्षकों को न केवल प्रभावी कक्षा तकनीकों और सॉफ्टवेयर के ज्ञान में प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। हालाँकि कई अध्ययनों ने सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में शिक्षकों की चिंताओं की भी जाँच की। कुछ शिक्षक सूचना प्रौद्योगिकी को शिक्षकों के रूप में अपनी भूमिका के लिए खतरा मानते हैं।

मर्टेंस और रॉबर्ट्स, आज, हाई स्कूल और कॉलेज के माध्यम से शिक्षकों को उन छात्रों के साथ आमने–सामने मिलने की संभावना है जो सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में अधिक जानते हैं। यह विचलित करने वाला हो सकता है, यहां तक कि उन शिक्षकों के लिए भी खतरा हो सकता है जो मानते हैं कि उन्हें कक्षा में सर्वोच्च अधिकारी होना चाहिए। कुछ शिक्षक परिवर्तन के लिए प्रतिरोधी हैं। और कुछ अन्य शिक्षकों ने स्वीकार किया है कि सूचना प्रौद्योगिकी प्रौद्योगिकी सबसे अधिक डराने वाली थी, हालांकि उन्होंने प्रमाणित किया कि उनकी कक्षाओं में सूचना प्रौद्योगिकी प्रौद्योगिकी की शुरूआत उनके करियर में सबसे रोमांचक विकासों में से एक थी।

कुलिक, खलीली और शशानी, 1980 के दशक से, शोधकर्ताओं ने इसकी कई समीक्षाएं प्रस्तुत की हैं। साहित्य, मुख्य रूप से प्रभावशीलता पर अनुभवजन्य अनुसंधान का मेटा–विश्लेषण स्कूलों में सूचना प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों की। ये अध्ययन एक दूसरे से भिन्न थे। अलग–अलग समय अवधि, शैक्षिक स्तर और सूचना प्रौद्योगिकी पर उनके फोकस में अनुप्रयोग। हालांकि, नतीजे बताते हैं कि जिन छात्रों को मदद मिली। सूचना प्रौद्योगिकी से आमतौर पर कक्षाओं में अधिक सीखा जाता है, लंबे समय तक याद किया जाता है, और अपना पाठ सीखने में कम समय व्यतीत किया ।

थॉम्पसन, एल.य कू, एच. स्कूल के सूचना प्रौद्योगिकी अलग–अलग क्षमताओं वाले छात्रों को अलग तरह से पेश करते हैं। अब तक, निम्न–क्षमता वाले छात्रों पर सबसे अधिक सूचित प्रभाव बेहतर प्रेरणा, आत्मविश्वास और आत्म–अनुशासन है। इसके अलावा, शिक्षकों ने यह भी बताया कि सूचना प्रौद्योगिकी उच्च–क्षमता वाले छात्रों को मुख्य रूप से उच्च–क्रम सोच कौशल, कार्यक्रम कौशल, लेखन, विज्ञान परियोजनाओं, स्कूल से बाहर की गतिविधियों, करियर की

तैयारी, वास्तविक दुनिया के अनुभव और अन्य गतिविधियों, अर्थात् उच्च–क्षमता के साथ मदद करते हैं।

झांग, जे विशेष शिक्षा के शिक्षकों और नियमित शिक्षकों ने सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग की प्रभावशीलता के बारे में अलग–अलग अनुभव किया था। विशेष शिक्षा शिक्षकों ने बताया कि विविध सूचना प्रौद्योगिकी निर्देश का कम उपलब्धि प्राप्त करने वालों पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा, जबकि नियमित शिक्षकों ने माना कि सूचना प्रौद्योगिकी प्रौद्योगिकी का सभी छात्रों पर या विशेष रूप से उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वालों पर समान प्रभाव पड़ा। इस प्रकार, ऐसा लगता है कि विशेष और नियमित शिक्षा शिक्षकों के अलग–अलग अनुभवों का सूचना प्रौद्योगिकी प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग को देखने के तरीके पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

हेंडरसन, एल अपने शिक्षण में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करते समय, शिक्षकों के पास सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए सामाजिक या प्रेरक लक्ष्यों के बजाय शैक्षणिक थे, लेकिन उन्होंने महसूस किया कि सूचना प्रौद्योगिकी के सकारात्मक प्रभाव शैक्षणिक क्षेत्र में प्रेरक नहीं थे। इसी तरह के निष्कर्ष 1989 में कक्षा शिक्षकों के सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति के राष्ट्रीय सर्वेक्षण में सामने आएः सत्तासी प्रतिशत ने महसूस किया कि कक्षा के सूचना प्रौद्योगिकी गणित और विज्ञान में अधिक रुचि को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

बेकर्स राष्ट्रीय शिक्षक सर्वेक्षण में पाया गया कि उच्च स्तर के सूचना प्रौद्योगिकी सहायता प्राप्त निर्देश (ड्रिल और अभ्यास और ट्यूटोरियल) विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर उपयोग में थे, लेकिन कुछ सकारात्मक संज्ञानात्मक परिणामों (अकादमिक शिक्षा में सुधार) की आवश्यकता थी। इसके बजाय, शिक्षकों ने महसूस किया कि सूचना प्रौद्योगिकी निर्देश का प्राथमिक प्रभाव छात्र प्रेरणा, उत्साह, या ''सीखने के अवसर'' में वृद्धि कर रहा था। उनके अध्ययन में मेटा–विश्लेषण के परिणामों ने संकेत दिया कि सीएआई (सूचना प्रौद्योगिकी सहायक निर्देश) का छात्र संज्ञानात्मक परिणाम पर मामूली सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उनके अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि सीएआई का उपयोग करने के परिणाम उपयोग किए जा रहे विशिष्ट सॉफ्टवेयर और पढ़ाए जा रहे विषय की सामग्री से परे हैं। छात्र सीएआई के माध्यम से कुछ संज्ञानात्मक

कौशल, जैसे तर्क कौशल, तार्किक सोच और योजना कौशल और सामान्य समस्या समाधान कौशल हासिल करने में सक्षम हैं।

शोध–जर्नल्स –

- I JRAR. ORG, ESTD year : 2014, International Journal of research and Analytical Reviews-2014
- Education Researcher (AERA)
- IJIRD ISSN 2278-0211-2019
- International Journal of Advanced Education and Research-2018
- International Journal of Research in Hindi-2020

पत्र–पत्रिकाएँ–

- "International Journal of Yoga" - 2008
- "Journal of Yoga and Physical Therapy" - 2011
- "Journal of Yoga and Meditation" - 2014
- "Journal of Yoga and Psychological Health" - 2018
- "Journal of Yoga and Physical Education" - 2018

वेबसाइट्स–

- https://www.yogajournal.com
- https://www.yogainternational.com
- https://www.yogaworks.com
- https://www.doyogawithme.com
- https://www.myyogaworks.com

शोध के उद्देश्यः

1. सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति को मापने के लिए एक उपकरण विकसित करना।

2. सूचना प्रौद्योगिकी के साथ बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की सीखने की शैली का पता लगाना।

3. सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के अभिवृत्ति का पता लगाना।

4. सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का पता लगाना।

5. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के चयनित उत्तरदाताओं के बीच सूचना प्रौद्योगिकी के साथ उनकी सीखने की शैली के संबंध में अध्ययन करना।

6. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के चयनित उत्तरदाताओं के बीच कम्प्यूटर भय अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

7. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के चयनित उत्तरदाताओं के बीच सूचना प्रौद्योगिकी के साथ उनकी सीखने की शैली के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर है सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान के संबंध का पता लगाना।

8. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के चयनित शहरी एवं ग्रामीण उत्तरदाताओं के बीच सूचना प्रौद्योगिकी के साथ उनकी सीखने की शैली के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर है का अध्ययन करना।

9. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के चयनित शहरी एवं ग्रामीण उत्तरदाताओं के बीच कम्प्यूटर भय के साथ उनकी सीखने की शैली के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर है का अध्ययन करना।

10. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के चयनित कला, वाणिज्य, विज्ञान एवं भाषा उत्तरदाताओं के बीच सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति उनके अभिवृत्ति के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर है, का अध्ययन करना।

11. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के चयनित कला, वाणिज्य, विज्ञान एवं भाषा उत्तरदाताओं के बीच कम्प्यूटर भय के प्रति उनके अभिवृत्ति के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर है, का अध्ययन करना।

12. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के चयनित कला, वाणिज्य, विज्ञान एवं भाषा विषय के पुरूष उत्तरदाताओं के बीच सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति उनके अभिवृत्ति के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर है, का अध्ययन करना।

13. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के चयनित कला, वाणिज्य, विज्ञान एवं भाषा विषय के महिला उत्तरदाताओं के बीच सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति उनके अभिवृत्ति के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर है, का अध्ययन करना।

14. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के चयनित कला, वाणिज्य, विज्ञान एवं भाषा विषय के महिला उत्तरदाताओं के बीच कम्प्यूटर भय के प्रति उनके अभिवृत्ति के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर है, का अध्ययन करना।

15. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के चयनित कला, वाणिज्य, विज्ञान एवं भाषा विषय के पुरूष उत्तरदाताओं के बीच कम्प्यूटर भय के प्रति उनके अभिवृत्ति के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर है, का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन का क्षेत्र :

शोध अध्ययन का क्षेत्र जयपुर जिला रहेगा। जयपुर, पूर्व में जयपुर, भारतीय राज्य राजस्थान की राजधानी और सबसे बड़ा शहर है। 2011 तक, शहर की आबादी 3.1 मिलियन थी, जिससे यह देश का दसवां सबसे अधिक आबादी वाला शहर बन गया। जयपुर को इसकी इमारतों की प्रमुख रंग योजना के कारण गुलाबी शहर के रूप में भी जाना जाता है। इसे भारत के पेरिस के रूप में भी जाना जाता है, और सी वी रमन ने इसे महिमा का द्वीप कहा। यह

राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली से 268 किमी (167 मील) की दूरी पर स्थित है। जयपुर की स्थापना 1727 में आमेर के शासक कछवाहा राजपूत शासक जय सिंह द्वितीय ने की थी, जिनके नाम पर शहर का नाम पड़ा। यह आधुनिक भारत के शुरुआती नियोजित शहरों में से एक था, जिसे विद्याधर भट्टाचार्य द्वारा डिजाइन किया गया था। ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान, शहर जयपुर राज्य की राजधानी के रूप में कार्य करता था। 1947 में आजादी के बाद जयपुर को नवगठित राज्य राजस्थान की राजधानी बनाया गया।

जयपुर भारत में एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है और दिल्ली और आगरा (240 किमी, 149 मील) के साथ पश्चिम स्वर्ण त्रिभुज पर्यटन सर्किट का एक हिस्सा है। जयपुर शहर की स्थापना आमेर के राजा, महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने 18 नवंबर 1727 को की थी, जिन्होंने 1699 से 1743 तक शासन किया था। जनसंख्या और पानी की बढ़ती कमी। जयपुर के लेआउट की योजना बनाते समय जय सिंह ने वास्तुकला और वास्तुकारों पर कई पुस्तकों से परामर्श किया। विद्याधर भट्टाचार्य के स्थापत्य मार्गदर्शन में, वास्तु शास्त्र और शिल्पा शास्त्र के सिद्धांतों के आधार पर जयपुर की योजना बनाई गई थी। शहर का निर्माण 1726 में शुरू हुआ और प्रमुख सड़कों, कार्यालयों और महलों को पूरा करने में चार साल लगे। शहर को नौ ब्लॉकों में विभाजित किया गया था, जिनमें से दो में राज्य भवन और महल शामिल थे, शेष सात जनता को आवंटित किए गए थे। विशाल प्राचीर का निर्माण किया गया था, जिसे सात गढ़वाले फाटकों से छेदा गया था।

सवाई राम सिंह प्रथम के शासन के दौरान, 1876 में एचआरएच अल्बर्ट एडवर्ड, वेल्स के राजकुमार (जो बाद में किंग एडवर्ड सप्तम, भारत के सम्राट बने) के स्वागत के लिए शहर को

गुलाबी रंग में रंगा गया था। कई रास्ते अभी भी गुलाबी रंग में रंगे हुए हैं, जिससे जयपुर एक विशिष्ट रूप और विशेषण गुलाबी शहर। 19वीं शताब्दी में, शहर का तेजी से विकास हुआ और 1900 तक इसकी आबादी 1,60,000 हो गई। विस्तृत बुलेवार्ड पक्के थे और इसका मुख्य उद्योग धातुओं और संगमरमर का काम था, जिसे 1868 में स्थापित एक कला स्कूल द्वारा बढ़ावा दिया गया था। शहर में तीन कॉलेज थे, जिनमें एक संस्कृत कॉलेज (1865) और एक लड़कियों का स्कूल (1867) शामिल था। महाराजा राम सिंह द्वितीय का शासनकाल। अगस्त 1981 में हवाई अड्डे सहित शहर के बड़े क्षेत्रों में बाढ़ आ गई, जिसके परिणामस्वरूप आठ लोगों की मौत हो गई और शहर की द्रव्यवती नदी को बहुत नुकसान हुआ। बाढ़ तीन दिनों के बादल फटने के कारण आई थी जिससे वार्षिक औसत से अधिक बारिश हुई थी।

शोध प्रचना :

मेरे द्वारा इस विषय– ''**बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति एवं उनमें कम्प्यूटर भय का अध्ययन''** पर किये जाने वाला शोध कार्य व्यवस्थित, प्रमाणिक एवं विश्वसनीय बन सके इसके लिए मैंने एक शोध प्रचना का निर्माण किया है। मेरे शोध विषय एवं शोध कार्य की प्रकृति को देखते हुए अन्वेषणात्मक एवं विवरणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया जायेगा। शोध से संबंधित इन शोध पद्धति के प्रकारों का उपयोग करते हुए शोध से संबंधित तथ्य एवं आकड़े संकलित करने के लिए प्राथमिक शोध प्रविधि के रूप में अवलोकन, साक्षात्कार–अनुसूची का प्रयोग किया जायेगा। शोध कार्य को व्यवस्थित, प्रभावी, विश्वसनीय व तर्कपूर्ण बनाने के लिए द्वितीयक स्त्रोत के रूप में शोध विषय से संबंधित पूर्व शोध–ग्रन्थ, पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाऐं, सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओं की रिपोर्ट, विभिन्न वेब साइटों को प्रयोग में लाया जायेगा।

निदर्शन पद्धति एवं न्यायदर्श चयनः

शोध विषय– ''**बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति एवं उनमें कम्प्यूटर भय का अध्ययन''** की प्रकृति को देखते हुए गुणात्मक तथ्य, सूचनाऐं एवं आंकड़ें प्राप्त करने के लिए अध्ययन क्षेत्र (समग्र) जयपुर में उत्तरदाताओं के चयन हेतु उद्देश्यात्मक निदर्शन (Purposive Sampling) पद्धति का चयन करके निश्चित आकर में निदर्श (Sample) लिया जायेगा। इसके पश्चात् दैव निदर्शन (Random Sampling) पद्धति का प्रयोग करके छात्र उत्तरदाताओं का चयन किया जायेगा, जिससे न्यायदर्श (Sampling) में कोई कमी एवं भेदभाव न रहे।

शोध विषय का न्यायदर्श प्रारूप

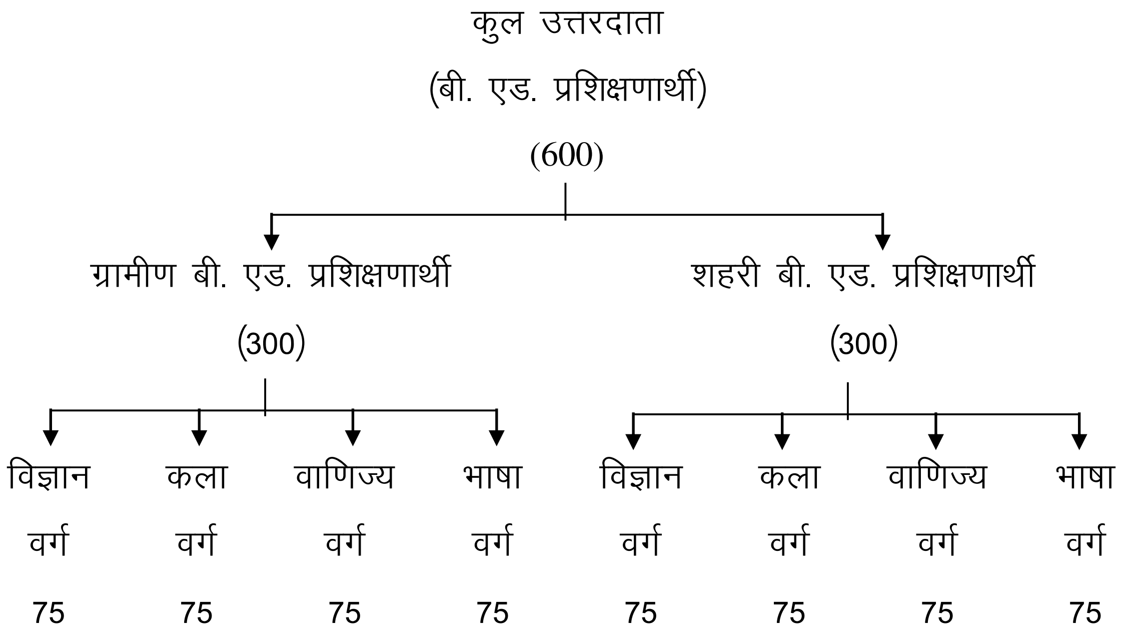

अध्यायीकरण (Chapterization):

मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध विषय– ''**बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति एवं उनमें कम्प्यूटर भय का अध्ययन**'' से संबंधित सम्पूर्ण शोध कार्य को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने हेतु निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत किया जायेगा–

अध्याय–प्रथम – शोध अध्ययन का परिचय

अध्याय–द्वितीय – साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय–तृतीय – सूचना प्रौद्योगिकी की अवधारणा, बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की इसके प्रति अभिवृत्ति–विश्लेषणात्मक अध्ययन

अध्याय चतुर्थ – कम्प्यूटर भय की अवधारणा, बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की इसके प्रति अभिवृत्ति–विश्लेषणात्मक अध्ययन

अध्याय पंचम – सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

***

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

- **जैन, डॉ. गरिमा** – स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा शिक्षण, युनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर–2007
- **जॉन डब्ल्यू वेस्ट–"**रिसर्च एन एजूकेशन'' प्रिटिंग हॉल इन्क इन्गल्वुड क्लिफ्स एन.जे. 1959
- **कपिल एच. के – "**अनुसंधान की विधियाँ'' एच. पी. भार्गव बुक हाऊस आगरा, संस्करण 2001
- **पालीवाल, डॉ. शिखा, पालीवाल, डॉ. यामिनी एवं जाटव, डॉ. पी.एल.** – ''शारीरिक शिक्षा एवं योग'', राजस्थान प्रकाशन
- **सिडाना, डॉ. अशोक कुमार** – ''स्वास्थ्य व शारीरिक शिक्षा शिक्षण'' शिक्षा प्रकाशन–2009
- **सिंह, डॉ. होशियार एवं डॉ. सुशील कुमार** – ''स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य शिक्षा'' निपुण प्रकाशन, 2019
- **शैरी, डॉ. जी.पी. एवं शुक्ला, डॉ. सी.एस.** – ''स्वास्थ्य शिक्षा'' विनोद पुस्तक मंदिर, 2009
- **शर्मा, आर. ए. –** ''शिक्षा अनुसंधान'' आर. लाल बुक डिपो मेरठ, संस्करण–2007
- **वेस्ट, डब्ल्यू जॉन –** ''रिसर्च एन एजूकेशन'' हॉल प्रा. लि. नई दिल्ली सं. 1973,
- **वेस्ट जॉन डब्ल्यू – "**रिसर्च एन एजूकेशन'' प्रिन्टिग हॉल ऑफ इण्डिया प्रा. लि., नई दिल्ली, 2006
- **शर्मा, आर. ए. –** ''शिक्षा तकनीकि'' कमल बुक डिपो मेरठ, संस्करण–2006
- **वर्मा, रामपाल सिंह –** ''व्यवहारिक मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, संस्करण–2004
- **वर्मा, रामपाल सिंह –** ''शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, संस्करण–2001

* **गुप्ता, एस. पी. –** ''शिक्षा तथा मनोविज्ञान में आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक डिपो, इलाहबाद, संस्करण–1996
* **स्टाल, ए बी कोशमन, जी., टी., और सदर्स, डी.** (2011) सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सहयोगी शिक्षाः एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। आरके सॉयर (एड), कैम्ब्रिज हैंडबुक ऑफ लर्निंग साइंसेज।
* **हेमलो–सिल्वर, सीई** (2015) सहयोगी शिक्षण का विश्लेषणः प्रक्रियाओं और परिणामों को समझने के लिए कई अभिवृत्ति। लर्निंग साइंस, यूएसए
* **बैनन ए बी, लियाम जे.** (2019) सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सहयोगात्मक शिक्षण के मुद्देः इटली, सितम्बर 1989 में आयोजित में प्रदर्शित करने के।
* **ओनरूबिया, जे.य एंगेल, ए** (2018) सहयोगी लेखन के लिए रणनीतियाँ और सीएससीएल वातावरण में ज्ञान निर्माण के चरणः सूचना प्रौद्योगिकी और शिक्षा।
* **लार्सन ए बी, जे.य अल्टरमैन, आर** (2016) सहयोगी शिक्षा के ''सहयोगी'' भाग का समर्थन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंप्यूटर–सपोर्टेड कोलैबोरेटिव लर्निंग।
* **नेल्सन, बी.य केटेलहुट, डी** (2018) शैक्षिक बहु–उपयोगकर्ता आभासी वातावरण में एम्बेडेड मार्गदर्शन और आत्म–प्रभावकारिता की खोज। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंप्यूटर–सपोर्टेड कोलैबोरेटिव लर्निंग।
* **लाजोई, एस.य वाइसमैन, जे** (2015) सीएससीएल टूल्स के साथ समस्या–आधारित शिक्षा का मचान। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंप्यूटर–सपोर्टेड कोलैबोरेटिव लर्निंग।
* **कोशमन, टी.य फेल्टोविच, पीय मायर्स, ए.य बैरो, एच** (2017) समस्या–आधारित शिक्षा के लिए सीएससीएल के निहितार्थः सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सहयोगी शिक्षण पर विशेष मुद्दा। लर्निंग साइंसेज के जर्नल।
* **ब्लुमेनफेल्ड, पी.य सोलोवे, ई.य मार्क्स, आर.य क्रेजिक, जे.य गुजदियाल, एम.य पलिंकसर, ए.** (2015) प्रोजेक्ट–बेस्ड लर्निंग को प्रेरित करनाः डूइंग को बनाए रखना, लर्निंग को सपोर्ट करना। शैक्षिक मनोवैज्ञानिक।

- **यांग, स्टीफन जेएच** (2006) पीयर–टू–पीयर कोलैबोरेटिव लर्निंग के लिए कॉन्टेक्स्ट अवेयर सर्वव्यापी लर्निंग एनवायरनमेंट। जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एंड सोसाइटी।
- **कोबे, एल.य वेनबर्गर, ए.य डिलनबर्ग, पी.य हैरर, ए.य हमालीनन, आर.य हक्किनन, पी.य फिशर, एफ** (2018) सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सहयोग स्क्रिप्ट निर्दिष्ट करना, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सूचना प्रौद्योगिकी सपोर्टेड लर्निंग।
- **शूननबूम, जे** (2018) एक स्क्रिप्ट का प्रभाव और ग्राउंडिंग चर्चाओं में एक संरचित इंटरफेस। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंप्यूटर–सपोर्टेड कोलैबोरेटिव लर्निंग।
- **स्टाल, जी. और हेस्से, एफ.** (2015) सीएससीएल में अभ्यास परिप्रेक्ष्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सूचना प्रौद्योगिकी सपोर्टेड कोलैबोरेटिव लर्निंग।
- **ऑस्ट, एलन और बिशेलमेयर,** (2015) प्यूटर–मध्यस्थ सहयोगात्मक शिक्षाः सिद्धांत और व्यवहार। द मॉडर्न लैंग्वेज जर्नल।
- **डुपने और क्रेंडल,** (2015) ऑनलाइन सहयोगी वातावरण में निगरानी और मूल्यांकनः ई–लर्निंग समर्थन के लिए उभरती कम्प्यूटेशनल प्रौद्योगिकियां। हर्षे, पीएः सूचना विज्ञान संदर्भ।
- **मर्टेंसऔर रॉबर्ट्स,** (2016) दूरस्थ भाषा सीखने के माहौल में चिंता और गैर–चिंताः एक संशोधित प्रभाव के रूप में दूरी कारक (पीडीएफ) प्रणाली।
- **कुलिक, में खलीली और शशानी,** (2017) जॉइनिंग फोर्सः सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सहयोगी शिक्षा के माध्यम से धातु–भाषा संबंधी जागरूकता को बढ़ावा देना। भाषा जागरूकता।
- **थॉम्पसन, एल.य कू, एच.** (2017). चीनी स्नातक छात्रों के अनुभव और ऑनलाइन सीखने के प्रति अभिवृत्ति। एजुकेशनल मीडिया इंटरनेशनल।
- **झांग, जे** (2018) पूर्वी शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों पर एक सांस्कृतिक नजर. शैक्षिक प्रौद्योगिकी अनुसंधान और विकास।